ए सब लेवे रोसनी, पेहेचान के निसबत।
ए मैं बका हक की, करे हिदायत महामत।।५०।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम के मोमिन हैं वह अपने आप को अंगना समझकर तारतम वाणी से पहचान करें। यह अखण्ड परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज की 'मैं' (अहं) ही मेरे अन्दर बैठकर समझा रही है।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। २५९ ।।

पंच रोसनी का मंगला चरन

गैब बातें मेहेबूब की, बीच बका खिलवत।
हकें भेजी मुझ ऊपर, रूह-अल्ला ल्याए न्यामत।।१।।

अखण्ड परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज और मूल-मिलावा की जो हकीकत छिपी थी। श्री राजजी महाराज ने वह सब रूहअल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) के द्वारा मुझ पर भेजी।

रूह-अल्ला आया रूहन पर, उतर चौथे आसमान।
सब सुध लाहूती ल्याइया, जो लिख्या बीच फुरमान।।२।।

श्यामा महारानी चौथे आसमान (लाहूत परमधाम) से रूहों के वास्ते उतर कर आई हैं। कुरान में जैसा लिखा था, वह परमधाम की सब हकीकत लेकर आई हैं।

इलम लदुन्नी हक का, कुंजी बका की जे।
मेहेर करी मुझ ऊपर, खोल दिए पट ए।।३।।

श्री राजजी की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ही अखण्ड घर की कुंजी है। जिसे मेहर करके मेरे पास भेजा और घर के बन्द दरवाजे खोल दिए।

मोसों मिलाप कर कह्या, मैं आया रूहन पर।
अरवाहें जेती अर्स की, तिन बुलावन खातिर।।४।।

मुझसे श्री राजजी महाराज ने मिलकर कहा कि परमधाम की जितनी भी रूहें हैं, मैं उनको बुलाने के लिए आया हूं।

मोहे कह्या तेरी रूह, आई अर्स अजीम सों।
कुंजी देत हों तुझको, पट खोल दे सब को।।५।।

मुझे कहा कि तेरी रूह अखण्ड परमधाम से खेल में उतर कर आई है, मैं तुमको तारतम वाणी की कुंजी देता हूं। तुम सबकी अज्ञानता हटाकर परमधाम का ज्ञान दे दो।

न्यामत ल्याए सब रात में, लैलत-कदर के माहें।
बुलाए ल्याओ रूहें फजर को, वतन कायम है जांहें।।६।।

यह अखण्ड न्यामत लैल तुल कदर की रात्रि में लाए और कहा कि तारतम वाणी से उजाला करके, अर्थात् अन्धकार हटाकर सवेरे रूहों को बुलाकर अखण्ड घर ले आओ।

अर्स चौदे तबकों, नजर न आवत किन।
सो सेहेरग से नजीक, देखाया बका वतन।।७।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में अखण्ड घर किसी को दिखाई नहीं देता। अब वह तारतम वाणी के ज्ञान से प्राण नली (सेहेरग) से भी नजदीक है, दिखा दिया।

Nijanand App

एह इलम जिन आइया, सेहेरग से नजीक ताए।
ए पट नजरों खोल के, लिए अर्स में बैठाए।। ८ ।।

इस ज्ञान से जिसे समझ आ गई उसे परमधाम सेहेरग से नजदीक हो गया और अब यह अज्ञानता का परदा हटाकर उनको परमधाम में जागृत कर दिया।

ए नेक हकीकत केहेत हों, है बात बिना हिसाब।
सो जाने जो लेवे कुंजी, खोले माएने मगज किताब।। ९ ।।

यह हकीकत बहुत है। मैंने थोड़ी सी कही है। जो तारतम वाणी की कुंजी लेगा वही कुरान के छिपे भेदों के रहस्य खोलकर हकीकत को जान जाएगा।

सब किताबन की, जब पाई हकीकत।
तब तिन सब जाहेर हुई, महंमद हक मारफत।। १० ।।

जब सब धर्मग्रन्थों की हकीकत मिल गई, तब मुहम्मद साहब ने परमधाम और श्री राजजी महाराज की जो बातें कही थीं, वह जाहिर हो गईं।

एह न्यामत जब आई, तब खुले सब द्वार।
जो पट कानों न सुने, सो खोले नूर के पार।। ११ ।।

जब कुरान के छिपे भेदों के रहस्य खुल गए तब अक्षर के पार जो परमधाम है, जिसके बारे में किसी ने सुना तक नहीं था, उसके सब दरवाजे खुल गए।

बादल रूह-अल्लाह का, बरस्या वतनी नूर।
अर्स बका का नासूत में, हुआ सब जहूर।। १२ ।।

श्यामा महारानी को ही बादल कहा है जिसने परमधाम के ज्ञान की वर्षा की। जिससे इस संसार में अखण्ड परमधाम की जानकारी सबको मिल गई।

जब थें दुनी पैदा हुई, अब लग थें अव्वल।
बका पट किने न खोल्या, कई गए ब्रह्मांड चल।। १३ ।।

जब से दुनियां बनी है तब से अब तक कई ब्रह्माण्ड हो गए, परन्तु अखण्ड परमधाम की पहचान किसी ने नहीं कराई।

अव्वल पैदा होए के, दुनी हो जात फना।
तिनमें कछुए ना रहे, ज्यों उड़ जात सुपना।। १४ ।।

दुनियां पहले बनती है और फिर मिट जाती है। जैसे सपना टूट जाता है वैसे ही यहां कुछ नहीं रह जाता।

ऐसे खेल कई हुए, सो फना ही हो जात।
एक जरा बाकी ना रहे, कोई करे न बका की बात।। १५ ।।

ऐसे कई ब्रह्माण्ड बने और मिटे, लेकिन किसी का कुछ भी शेष रहा ही नहीं। परमधाम की बात किसी ने कही ही नहीं।

Nijanand App

दौड़े कई पैगंमर, कई तीर्थंकर अवतार।
अव्वल से आखिर लग, किन खोल्या न बका द्वार।। १६ ।।

कई पैगम्बर, तीर्थंकर और अवतार शुरू से आखिर तक दौड़े, परन्तु किसी ने अखण्ड की पहचान नहीं कराई।

चौदे तबकों बका का, कोई बोल्या न एक हरफ।
तो ए क्यों पावे हक सूरत, किन पाई न बका तरफ।। १७ ।।

चौदह लोकों की दुनियां में किसी ने अखण्ड का एक शब्द भी नहीं बोला। अब जिनको अखण्ड घर की पहचान ही नहीं हुई तो वह पारब्रह्म के स्वरूप को कैसे जानेंगे?

जो हक पैदा होए नासूत में, तो होय सबे हैयात।
इलम अपना देय के, करें जाहेर बका बिसात।। १८ ।।

अब इस संसार में पारब्रह्म प्रकट हुए हैं। इस कारण से यह ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा। सबको अपना तारतम ज्ञान देकर परमधाम की हकीकत जाहिर कर देंगे।

सो इलम रूहअल्ला, ले आया हक का।
सेहेरग से नजीक देखाए के, माहें बैठावत बका।। १९ ।।

उस तारतम ज्ञान को लेकर श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए, जिन्होंने उस तारतम वाणी से परमधाम प्राण नली से (सेहेरग से) नजदीक दिखाया। उस वाणी से ही सबको अखण्ड करेंगे।

ए बात सुनो तुम मोमिनों, अपनी कहूं बीतक।
मेहेर करी मुझ ऊपर, ए इलम खुदाई बेसक।। २० ।।

हे मोमिनो! मैं अपनी हकीकत बताती हूं। तुम सुनो। श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी देकर बड़ी मेहर की है जिससे मेरे सब संशय मिट गए।

कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब।
हक इलम से देखिए, सोई साइत है अब।। २१ ।।

खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने रूहों को यही कहा था कि मैं ही एक तुम्हारा खाविंद हूं। अब तारतम वाणी से देखते हैं तो अभी भी वही समय है।

दुनियां दिल मजाजी, कह्या सो कछुए नाहें।
और दिल हकीकी मोमिन, हक अर्स कह्या इनों माहें।। २२ ।।

दुनियां जो झूठे दिल की है वह कुछ भी नहीं है। मोमिनों के दिल हकीकी हैं जिनमें श्री राजजी की बैठक है।

इलम हक और दुनी का, कही जाए ना तफावत।
ए सुकन सुन रूह मोमिन, आवसी अर्स लज्जत।। २३ ।।

तारतम वाणी के ज्ञान की और दुनियां के ज्ञान की तुलना नहीं हो सकती। तारतम वाणी के वचनों को सुनकर मोमिनों को अखण्ड घर के सुख मिलेंगे।

Nijanand App

बीच बका के रूहन सों, हकें करी खिलवत।
सो साथ रूह-अल्लाह के, भेजे संदेसे इत।। २४ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज ने जो बातें की हैं, वही संदेश श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) के साथ यहां मोमिनों के लिए भेजे।

रूह-अल्ला आए अर्स से, मुझ सों किया मिलाप।
कहे मैं आया तुम वास्ते, मुझे भेज्या है आप।। २५ ।।

परमधाम से श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए, मुझसे मिले और कहा कि मुझे श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे वास्ते परमधाम से भेजा है।

ए न्यामत हक के दिल की, सोई जाने दई जिन।
या दिल जाने मेरी रूह का, सो कहूं आगे मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल की बातों को वह स्वयं ही जानते हैं या मेरी रूह जानती है। जिसे मैं मोमिनों के आगे कह रही हूं।

ए न्यामत वाहदेत की, हक के दिल की बात।
और कोई ना ले सके, बिना बका हक जात।। २७ ।।

यह परमधाम की न्यामत श्री राजजी महाराज के दिल की बातें बिना हक जात (मोमिनों) के और कोई नहीं ले सकता।

रूह-अल्ला कहे अर्स से, तेरी रूह आई उतर।
मैं दई बका तोहे न्यामत, अव्वल से आखिर।। २८ ।।

श्यामा महारानी ने (श्री देवचन्द्रजी ने) कहा कि हे इन्द्रावती! तुम्हारी आत्मा परमधाम से उतरकर खेल में आई है। मैंने तुमको तारतम ज्ञान की अनमोल न्यामत दी है जिससे तुम्हें शुरू से अन्त तक की जानकारी मिल जाएगी।

बादल बरस्या रूह-अल्ला, ए बूंदें लई जो तिन।
और कोई न ले सके, बिना अर्स रूहन।। २९ ।।

श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने ज्ञान रूपी बादल की वर्षा की। उन बूंदों को जिन्होंने लिया वही परमधाम की आत्माएं हैं। जिनके तन परमधाम में नहीं है, वह इस ज्ञान को नहीं ले सकते।

जिन पिआ मस्ती तिन की, बीच दुनी के छिपे नाहें।
सो मस्ती मोमिनों जाहेर हुई, चौदे तबकों माहें।। ३० ।।

जिन्होंने इस ज्ञान को समझकर ग्रहण किया है उनकी मस्ती, रहनी दुनियां में नहीं छिपेगी, इसलिए मोमिनों की मस्ती की चाल दुनियां में जाहिर हो गई, क्योंकि इन्होंने उस अखण्ड ज्ञान के रस को पिया है।

हकें न छोड़े अव्वल से, अपना इस्क दिल ल्याए।
आप इस्क न छोड़ी निसबत, पर मैं गई भुलाए।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज शुरू से ही अपना इश्क दिल में लेकर मोमिनों को अपने से अलग नहीं करते। धनी ने अपनी अंगना से अपने इश्क का सम्बन्ध नहीं तोड़ा, पर मैं ही संसार में आकर भूल गई।

Nijanand App

जगाई तो भी ना जागी, आप कह्या इत आए।
मैं परी बीच फरेब के, मोहे थके जगाए जगाए।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज ने संसार में आकर मुझे जगाया तो भी मैं नहीं जागी। मैं दुनियां के माया जाल में फंसी थी, इसलिए मुझे जगा-जगाकर धनी थक गए।

इस्क न आवे पेहेचान बिना, सो मोको दई पेहेचान।
दई बातें हक के दिल की, हक की निसबत जान।। ३३ ।।

बिना पहचान के इश्क नहीं आता, इसलिए मुझे उन्होंने अपनी पहचान कराई। अपनी अंगना जानकर दिल की बातें बताईं।

मैं ना कछू जानी पेहेचान, मुझ पर करी मेहेनत।
मैं इस्क न जानी निसबत, ना तो मोहे दई हक न्यामत।। ३४ ।।

मैं फिर भी पहचान नहीं कर सकी। तब मेरे ऊपर बहुत जोर लगाया। मैंने न इश्क समझा और न मैं अंगना हूं यह जाना, जबकि मुझे तो श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की न्यामत दी।

इस्क पेहेचान ना निसबत, सब फरेबें दिया भुलाए।
हकें इस्क अपना, आखिर लो निबाहे।। ३५ ।।

माया ने इस संसार में हमारे इश्क को तथा मैं श्री राजजी की अंगना हूं (मेरे मूल सम्बन्ध), को भी भुला दिया, परन्तु श्री राजजी महाराज अपने सच्चे इश्क को आखिर तक निभा रहे हैं।

ए सुख सब्दातीत के, क्यों कर आवें जुबान।
बाले थें बुड़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज के यह अखण्ड सुख शब्दातीत हैं। जबान से वर्णन नहीं हो सकते। बचपन से बुढ़ापे तक मेरे धाम धनी की कृपा सदा ही बनी है।

तो भी घाव न लग्या अरवाह को, जो देखे अलेखे एहेसान।
न्यामत पाई बका हक की, कर दई रूह पेहेचान।। ३७ ।।

इतने एहसान होने पर भी मेरी रूह को घाव नहीं लगा, जबकि श्री राजजी महाराज ने अपनी पहचान कराकर अखण्ड घर की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी।

नजर से न काढ़ी मुझे, अव्वल से आज दिन।
क्यों कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो करत ऊपर मोमिन।। ३८ ।।

शुरू से आज दिन तक श्री राजजी महाराज ने मुझे अपने चरणों से अलग नहीं किया। ऐसे लाड़ले धनी की मेहर, जो सदा ही मोमिनों पर करते हैं, की सिफत का वर्णन कैसे करूं?

तन असल तले कदम के, और उपज्या तन सुपना।
ताए भी हक रहे नजीक, जो था बीच फना।। ३९ ।।

हमारे मूल तन (परआतम) श्री राजजी के चरणों में परमधाम में हैं। सपने में यह नया झूठा तन है और मिट जाने वाला है। फिर भी वह धनी इसके नजदीक हैं, क्योंकि दिल को अपना धाम बनाकर बैठे हैं।

Nijanand App

नीदें दिए गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन।
तिनको भी हकें न छोड़िया, सिर पर रहे रात दिन।। ४० ।।

माया ने हमारे सपने के तन को पहचान न होने के कारण खूब दुःखी किया। फिर भी श्री राजजी महाराज ने हमें छोड़ा नहीं और रात-दिन सिर पर खड़े रहे।

उमर अव्वल से आखिर लग, गुजरी सांई संग।
मैं पेहेले ना पेहेचाने, हक के इस्क तरंग।। ४१ ।।

मेरा जीवन शुरू से आखिर तक श्री राजजी के चरणों तले ही बीता। पहले मैंने श्री राजजी महाराज के प्रेम की लहरों को पहचाना नहीं। अब पहचान हो गई।

जो बात करनी है हकें, सो पेहेले लेवें माहें दिल।
पीछे सब में पसरे, जो वाहेदत में असल।। ४२ ।।

जो श्री राजजी महाराज को करना होता है वह पहले से ही दिल में ले लेते हैं। उसके बाद वह विचार परमधाम में सबके दिलों में आ जाता है, क्योंकि एकदिली है।

एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क।
सो देखलावने रूहों को, पेहेले दिल में लिया हक।। ४३ ।।

एक परमधाम की साहेबी और रूहों के साथ उनका कैसा इश्क है, यह रूहों को दिखाने के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने दिल में लिया।

जो पेहेले लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर।
तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर।। ४४ ।।

जिस बात को श्री राजजी महाराज ने पहले दिल में लिया, वह बाद में अक्षर के दिल में आई और फिर श्यामा महारानी और रूहों के दिल में आई और जाहिर हो गई।

वास्ते नूर-जलाल के, और हादी रूहन।
बोहोत बेवरा है खेल में, किया महंमद रूहों देखन।। ४५ ।।

अक्षर ब्रह्म के वास्ते और श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते खेल दिखाने की बाबत संसार के धर्मग्रन्थों में और कुरान में बहुत ज्यादा विवरण है।

महामत कहे ए मोमिनों, हक साहेबी बुजरक।
बेसक इलम हक का, और हक का बड़ा इस्क।। ४६ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की साहेबी बहुत महान है। श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी और इश्क भी बड़ा महान है।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ३०५ ।।

बेसकी का प्रकरण

ए इलम इन वाहेदत का, हकें सो बेसकी दई मुझ।
नूर के पार द्वार बका के, सो खोले अर्स के गुझ।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम की ऐसी एकदिली की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज ने मेरे सब संशय मिटा डाले और अक्षर के पार अखण्ड परमधाम और परमधाम के छिपे रहस्यों को खोल दिया।

Nijanand App